दो दिवसीय संगोष्ठी का सफल आयोजन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित "कृषि अनुसंधान की तकनीकी शब्दावली" पर दो दिवसीय संगोष्ठी दिनांक 21-22 जून, 2017 को भा.कृ.अ.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, हिमाचल चरागाह भूमि, पालमपुर द्वारा आयोजन किया गया। समारोह के आयोजन सचिव डॉ. सुदेश राडोत्रा ने बताया कि हिंदी में ज्ञान-विज्ञान के प्रचार एवं हिंदी विकास के लिए भारत सरकार ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की है। डॉ. शैलेन्द्र सिंह, सहायक वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि), वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत सरकार ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की विभिन्न शैक्षणिक योजनाओं के बारे में बताया। प्रो. आर. के. अग्निहोत्री, अधिष्ठाता, डॉ. जी.सी. नेगी पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौ. स. कु. हि. प्र. कृ. वि., पालमपुर ने भी संगोष्ठी में प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। संगोष्ठी में विषय विशेषज्ञों ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए एवं उन पर विस्तृत चर्चा की गई। संगोष्ठी में आमंत्रित आलेखों के अतिरिक्त कृषि एवं पशु पालन में उपयोगी तकनीकी शब्दावली पर भी विचार विमर्श हुआ। डॉ. विपिन कटोच, संयुक्त निदेशक (सेवा निवृत), पशु पालन विभाग, हि. प्र. ने संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में "कृषि प्रसार में हिंदी का महत्व" पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. राम रोशन शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. प.- भारतीय कृषि अनु. संस्थान, नई दिल्ली ने "फलों की थैलावंदी: उपाय एक, फायदे अनेक" विषय पर प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी प्रदान की। संगोष्ठी के दूसरे दिन, डॉ. रणवीर सिंह राणा, प्रधान वैज्ञानिक, चौ. स. कु. हि. प्र. कृ. वि., पालमपुर ने "पहाड़ी कृषि में जलवायु परिवर्तन के सम्बन्ध में अनुकूलन एवं अल्पीकरण विकल्पों का आंकलन", डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार गौड़, प्रधान वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. प.-भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्ज़तनगर ने "नस्ल सुधार में प्रजनन का महत्व", डॉ. ए. के. मिश्रा, विभागाध्यक्ष, पशु विज्ञान विभाग, भा. कृ. अनु. प.-केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसन्धान संस्थान (काजरी), जोधपुर ने "शुष्क क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का समुचित प्रबंधन", डॉ. अंकुर शर्मा, सह-प्राध्यापक, डॉ. जी.सी. नेगी पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौ. स. कु. हि. प्र. कृ. वि., पालमपुर ने "पशु चिकित्सक वर्ग एवं वन्य प्राणी जगत" एवं डॉ. जी. डी. शर्मा, प्रोफेसर, चौ.स.कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने "जैविक कचरे से महत्वपूर्ण केंचुआ खाद" पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में विभिन्न संस्थानों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिनमें मुख्य हैं- भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली, भा.कृ.अ.प.-केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर, भा.कृ.अ.प.-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसन्धान संस्थान, इज्ज़तनगर, चौ.स.कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर और शेरे-काश्मीर कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू से पधारे वैज्ञानिकों, कृषि विभाग एवं पशु पालन विभाग पालमपुर से कृषि एवं पशु चिकित्सा अधिकारियों ने भाग लिया। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि प्रोफेसर अशोक कुमार

सरयाल, माननीय कुलपति, चौ.स.कु.हि.प्र.कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने अपने सम्बोधन में कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा किया गया अनुसन्धान किसानों एवं पशु पालकों को सरल भाषा में उपलब्ध करवाया जाना चाहिए। विकसित तकनीकों को प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए आसान तकनीकी शब्दावली का होना अति आवश्यक है। किसानों की समस्याओं पर चिन्तन और आवश्यक रूप से इनका समाधान होना चाहिए। कृषि एवं पशु पालन सम्बन्धी अनुसन्धान किसानों को सरल भाषा में उपलब्ध करवाना इस गोष्ठी का प्रमुख उदेश्य है। अनुसन्धान को प्रसार विभागों को प्रभावी तरीके से लोगों तक पहुँचाने के लिए कदम उठाना भी इस संगोष्ठी का उदेश्य है। इसके अतिरिक्त राज-भाषा दिन-प्रतिदिन उपयोग में लाने के लिए भी आसानी होगी। तकनीकी शब्दावली आयोग से डॉ. शैलेन्द्र सिंह, सहायक वैज्ञानिक अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित हुए। दो दिवसीय संगोष्ठी का सफल आयोजन करने में डॉ. बी. सिंह, डॉ. रिंकू शर्मा, डॉ. देवी गोपीनाथ, डॉ. वी. के. शर्मा, डॉ. विनोद शर्मा, डॉ. डेजी रानी, एवं डॉ. अरुण शर्मा का विशेष योगदान रहा। डॉ. जी. मल, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।